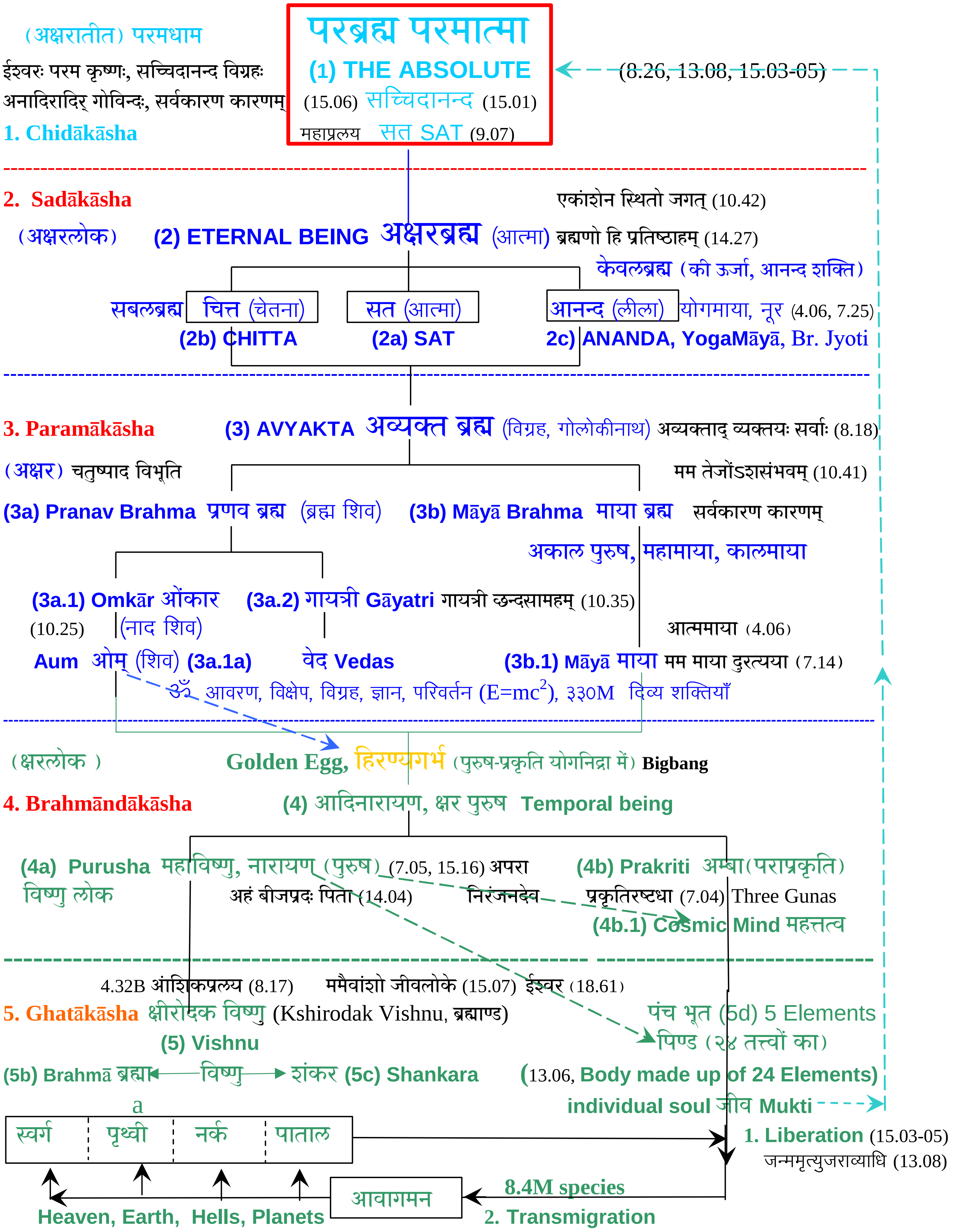

Notes: Numbers in black inside brackets refer to verse nos. in the Gita (download: www.gita-society.com/genesis.pdf)

अहं सर्वस्य प्रभवो (**10.08**), मत्तः परतरं नान्यत् (**7.07**), वासुदेवः सर्वम् इति (**7.19**), **15.12-15; (9.19,11.37,13.12, 15.18)**

न हि ज्ञानेन सदृशं (**4.38**), ददामि बुद्धियोगं तं (**10.10, 18.55**), जीव=प्र+पु (**13.21**) **both all3 none above2**

DESCENT OF THE SUPREME BEING

Note: **The following explanation is** only **for advanced readers who have studied Gita for several years and are familiar with some Sanskrit terms. Readers should also visit our website:**

http://www.gita-society.com/pdf/genesis.pdf

for a diagram showing this hierarchy of cosmic control that will make the following explanations more clear. (the diagram is shown above)

In Vedic cosmology, the cosmic space (Akāsha) is divided into five major zones: **1. Chidākāsha, 2. Sadākāsha, 3. Paramākāsha, 4. Brahmāndākāsha, and 5. Ghatākāsha.** The **Supreme Being (1)** resides in ParamaDhāma (Supreme Abode, Gita 15.06), located in **Chidākāsha**, the uppermost space. ShriKrishna is known here as Paramātmā, Supreme Being, Supersoul, ParaBrahma, Purushottama, Saccidānanda, Absolute, Father, the Supreme Personality of Godhead and by various other names.

(2) Akshar Brahma (Eternal Being or Atma) is the expansion of the **SAT** (or existence) nature of Supreme Being in **Sadakasha**, as explained in Gita 10.42 and 14.27. Akshara Brahma, mentioned in Gita 8.03 and 15.16, has three major expansions (Pada or natures). They are: **(2a) Sat, (2b) Chitta or Sabal Brahma,** and **(2c) Ananda or Keval Brahma.** Sat nature is also called Atma or Parameshvara. Chitta nature has various other names, such as Chaitanya Braham, Consciousness, ParamaShiva, cosmic intellect, and Paratma. Ananda, the blissful energy of Keval Brahma, is also called YogaMaya (Gita 4.06, 7.25).

(2b) Chitta and **(2c)** Ananda natures combine to give rise to the fourth Pada, the **Avyakta Brahma** or **(3) Avyakta Akshara Brahma** in **Paramakasha**. This is known by various names such as the inexplicable Brahma, Avyakta, Adi Purusha, Adi Prakriti, Pradhan, Sarva Karana Karnam (the cause of all causes). Avyakta Brahma, a small fraction of the Absolute, expands into infinite cosmos, as mentioned in Gita 8.18 and 10.41. Paramakash is also the abode of major powers of YogaMaya, such as: power to veil the real nature of things (Avaran Shakti), power to place obstructions (Vikshep Shakti), powers to multiply and become many (Vigrah Shakti), powers of cosmic intellect, knowledge, and action, and power of converting energy into matter and vice versa.

Lord Krishna is known as **Golokinatha** in Paramakasha. Golokinatha (or Avyakta Brahma) has two major expansions: **(3a) PranavaBrahma (or BrahmaShiva) and (3b) Maya Brahma. PranavaBrahma** expands into **(3a.1) Omkara (or Nadashiva). Omkara** expands into **(3a.1a) AUM** (or **Shiva)** (Gita 10.25). **PranavaBrahma** also gives rise to **(3a.2) Gayatri** (Gita 10.35) which is the abode of the **Vedas** (Gita 7.08).

(3b) MayaBrahma is a reflection of **(2c) YogaMaya** in Paramakasha. It undergoes further successive transformations as: MahaMaya, KalaMaya and **(3b.1)** Maya (Gita 7.14).

The creative power of Maya creates **Brahmandakasha** by a small fraction (Residual Energy) of her power. A Golden Egg or **HiranyaGarbha (4)** is also created by Maya Devi in Brahmandakash. **AdiNarayana** (or **Adi Purusha, Shambhu, MahaDeva**) and **MahaDevi** (or **Mother Nature/Amba**) remain in an inactive (YogaNidra) state for over 311 trillion years (verse 9.07) in the Golden Egg until the cosmic sound vibration (or a big bang) of **AUM** activates the Golden Egg giving rise to **(4a) Purusha** (also known as **Kshara Purusha, Narayana, MahaVishnu**, Gita 7.05, 15.16) and **(4b) Prakriti** (also known as **Nature**, Gita 7.04). MahaVishnu creates infinite Cosmic Eggs (Brahmandas) by His breathing power. Nature has three Gunas or modes (see Chapter 14). The combination of these three Gunas of Nature is called **(4b.1)** the Cosmic Mind (Mahatatattva, Tannamatra or **Mahat**).

In **Ghatakasha** (or Vishnu Loka), **Narayana/MahaVishnu** of Brahmandakasha appears as **(5) Lord Vishnu** where he is also called **Kshirodak Vishnu**, and he further expands his role as **(5b) Brahma** and **(5c) Shankara**. Brahma creates seven heavens, seven lower planets (Patals), Jambu islands, earth, and other hellish planets. During partial dissolution (Gita 8.17), the entire creation of Brahma rests in the abdomen of Kshirodak Vishnu. Narayana also expands as **Niranjan Deva** and **Ishvara**. **Niranjan Deva** activates the cosmic mind **(4b.1)** and creates **(5d) five basic elements** (earth, water, fire, air, subtle space, also see Gita 7.04) that are further transformed into a body mass (Pind) made up of **twenty four elements** (See Gita 13.06 for more details), out of which physical bodies of living beings, **Jeeva**, on the earth are created when the **Supreme Lord Krishna** puts His seed of life force (see verses 7.10, 10.39, and 14.04) into the body mass (Pind) and resides in the inner psyche of all beings as **Ishvara** (see Gita verses 15.07 and 18.61). Jeeva transmigrates into 8.4 million species of life on the earth as long as it remains in bodily concept due to the veil of ignorance created by Maya. Jeeva attains salvation when, by virtue of one's good Karma, one obtains the grace of God, Gita, or a SadGuru, and truly realizes that he or she is not this physical body or a doer; but Atma, a divine instrument and an integral part and parcel of the Supreme Being.

Everything in Brahmandakasha and Ghatakasha is called Kshara or temporal. Everything in Sadakasha and Paramakasha, is called Akshara or eternal. The Supreme Being is beyond both temporal and eternal as stated in verse 15.18.

परमपिता परमात्मा का अवरोहण

नोट– निम्न व्याख्या केवल उन प्रबुद्ध पाठकों के लिए है जिन्होंने गीता के अध्ययन में कुछ वर्ष लगाए हैं. पाठक-गण निम्न लिखित वैश्विक व्यवस्था को श्रेणी-क्रम (Hierarchy of Cosmic Control) से अंकित करते हुए रेखाचित्र को देखने के लिए कृपया website: www.gita-society.com/pdf/genesis.pdf पर जाएं. कोष्ठक के अन्दरवाले अंकों को website के रेखाचित्र में देखें.

वैदिक सृष्टि-शास्त्र में आकाश (Cosmic Space) पांच प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित है– (१) चिदाकाश, (२) सदाकाश, (३) परमाकाश, (४) ब्रह्माण्डाकाश, और (५) घटाकाश.

(१) चिदाकाश

परब्रह्म परमात्मा (1) का निवास, परमधाम (गीता १५.०६); सर्वोपरि स्थान, चिदाकाश, में स्थित है. यहां श्रीकृष्ण परमात्मा, परमप्रभु, परब्रह्म, पुरुषोत्तम, सच्चिदानन्द, पिता, परमेश्वर आदि विभिन्न नामों से जाने जाते हैं.

(२) सदाकाश

अक्षरब्रह्म (2) सदाकाश में परब्रह्म परमात्मा की सत् प्रकृति का विस्तार है, जैसा कि गीता १०.४२ और १४.२७ में बताया गया है. गीता के श्लोक ८.०३ और १५.१६ में उल्लिखित अक्षरब्रह्म के तीन प्रमुख विस्तार (या पाद) ये हैं – सत् (2a), सबलब्रह्म या चित्त (2b), और आनन्द (2c) अथवा केवलब्रह्म. सत् स्वभाव को आत्मा या परमेश्वर भी कहा गया है. चित्त स्वभाव के और भी विभिन्न नाम हैं, जैसे – चैतन्यब्रह्म, परमशिव और परात्मा. केवलब्रह्म की ऊर्जा, आनन्द, को गीता के श्लोक ४.०६ और ७.२५ में योगमाया भी कहा गया है.

(३) परमाकाश

चित्त (2b) और आनन्द (2c) प्रकृतियां परमाकाश में चतुर्थपाद, अव्यक्त अक्षरब्रह्म या अव्यक्तब्रह्म (3), के अवरोहण हेतु संयुज्य होती हैं. इसे कई नामों से जाना जाता है– जैसे अनिर्वचनीय ब्रह्म, अव्यक्त, आदिपुरुष, आदिप्रकृति, प्रधान, विग्रह और सर्वकारण-कारणम्. अव्यक्तब्रह्म, जो परब्रह्म (परमात्मा) का लघु अंश मात्र है, अनन्त ब्रह्माण्ड में विस्तार पाता है, जैसा कि गीता ८.१८ और १०.४१ में कहा गया है. परमाकाश योगमाया की प्रमुख शक्तियों–आवरण शक्ति, विक्षेप शक्ति, विग्रह शक्ति, ब्रह्मविद्या शक्ति, प्रज्ञा, कर्म तथा ऊर्जा को पदार्थ और पदार्थ को ऊर्जा में परिवर्तन करने की शक्ति आदि– का भी आवास है.

भगवान् कृष्ण परमाकाश में गोलोकीनाथ के रूप में जाने जाते हैं. गोलोकीनाथ अर्थात् अव्यक्तब्रह्म के दो प्रमुख विस्तरण हैं– ब्रह्मशिव या प्रणव-ब्रह्म (3a) और मायाब्रह्म (3b). प्रणवब्रह्म नादशिव या ओंकार (3a.1) में विस्तार पाते हैं, और ओंकार शिव या ओम् (3a.1a) में (गीता १०.२५). प्रणवब्रह्म का अवरोहण गायत्री (3a.2) (गीता १०.३५) में भी होता है, जो वेदों का आवास है (गीता ७.०८).

मायाब्रह्म परमाकाश में योगमाया का प्रतिबिम्ब है. यह अन्य क्रमिक परिवर्तित रूपों – जैसे महामाया, कालमाया और माया (3b.1) (गीता ७.१४) – में भी अवतरित होता है.

(४) ब्रह्माण्डाकाश

माया अपनी सर्जनात्मक ऊर्जा शक्ति के अल्पांश से ब्रह्माण्डा-काश का निर्माण करती है. ब्रह्माण्डाकाश में माया देवी हिरण्यगर्भ (Golden Egg) का भी निर्माण करती है. आदिनारायण (अथवा आदि पुरुष (4), क्षर पुरुष, शम्भू , महादेव) और महादेवी (अथवा आदि प्रकृति, मां, अम्बा) हिरण्यगर्भ में एक महाकल्प या 311 Trillion solar years तक योगनिद्रा में रहते हैं (गीता ६.०७). ओम् का ब्रह्मनाद हिरण्यगर्भ को सक्रिय अर्थात् जाग्रत् कर महाविष्णु – जो पुरुष (4a) या नारायण, (गीता ७.०५, १५.१६) नाम से भी जाने जाते हैं – और अम्बा या प्रकृति (4b) (गीता ७.०४) का उद्‌भव करता है. प्रकृति के तीन गुण हैं. (अध्याय १४ भी देखें.) प्रकृति के इन तीन गुणों का समुच्चय महत्तत्व, तन्नमात्रा अथवा महत् (4b.1) भी कहलाता है. महाविष्णु अपनी श्वाँस-शक्ति से घटाकाश में अनन्त ब्रह्माण्ड (Cosmic Eggs) की उत्पत्ति करते हैं.

(५) घटाकाश

घटाकाश (अथवा विष्णुलोक) में ब्रह्माण्डाकाश के नारायण या महाविष्णु विष्णु (5) के रुप में प्रकट होते हैं, जहाँ उनको क्षिरोदक-विष्णु भी कहा जाता है और वे अपनी भूमिका का विस्तार ब्रह्मा (5b) और शंकर (5c) के रूप में करते हैं. ब्रह्मा सात स्वर्गों, सात पातालों, जम्बूद्वीपों, धरा और अन्य नारकीय नक्षत्रों का सृजन करते हैं. आंशिक-प्रलय-काल (एक कल्प = 4.32 Billion years, गीता ८.१७) में ब्रह्मा की समस्त सृष्टि क्षिरोदक विष्णु के उदर में समाहित रहती है. नारायण अपना विस्तार निरंजन देव और ईश्वर के रूप में भी करते हैं. निरंजनदेव महत्तत्व को सक्रिय कर पंचभूतों (5d) – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश – का निर्माण करते हैं. (गीता ७.०४ भी देखें.)

पंचभूत विस्तृत होकर २४ तत्त्वों (गीता १३.०६ में व्याख्या देखें.) के बने हुए पिण्ड में परिवर्तित हो जाते हैं. पिण्ड से जीवों के पार्थिव शरीरों की रचना पृथ्वी पर की जाती है, जब नारायण अपनी जीवन-शक्ति का बीज (श्लोक ७.१०, १०.३६ और १४.०४ भी देखें) पिण्ड में प्रस्थापित करते हैं और ईश्वर के रूपमें समस्त जीवों के अन्तःकरण में निवास करते हैं. (१५.०७ और १८.६१ भी देखें.) जीव जब तक माया द्वारा निर्मित अज्ञान के पर्दे के कारण शारीरिक धारणा में रहता है तब तक पृथ्वी पर चौरासी लाख योनियों मे आवागमन करता रहता है. जीव उस समय मोक्ष प्राप्त करता है जब उसे अपने अच्छे कर्मों या भगवत्-कृपा से किसी सद्‌गुरु या गीता द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है और यह अनुभव कर लेता है कि वह पार्थिव शरीर या कर्ता नहीं है, वरन् परमात्मा का दैवी माध्यम और अभिन्न अंग, आत्मा, है.

ब्रह्माण्डाकाश और घटाकाश में हर वस्तु क्षर कहलाती है. सदाकाश और परमाकाश में हर वस्तु अक्षर (अविनाशी, शाश्वत) कहलाती है. परमात्मा को क्षर और अक्षर दोनों से परे, गीता के श्लोक १५.१८ में, अक्षरातीत कहा गया है.

Reference: Fourth Revised Hindi Edition of the Gita
Published by Motilal Banarsidass of New Delhi